भजन

तेरे दर को छोड़ कर जायें कहां
तेरा दर ही हमारी जन्नत है

1– थी आस बड़ी मुद्दतों से मेरी
तेरी नूरी झलक का नजारा मिले
थे ढूंढते जिसको मिला वह यहां,तेरा दर

2– मेरे महबूब तेरी मेहर की नजर
तेरे प्यार का कोई शुमार नहीं
अब जायें तो प्रीतम जायें कहां,तेरा दर

3– तेरी रहमत के भण्डार भरे
तेरे दर से दुआयें मिलती हैं
है शहदा जिसपे सारा जहान,तेरा दर

4– मेरा इश्क इक तेरी जात से है
मुझे और किसी से गर्ज है क्या
जब मिल ही गए मालिके दो जहान,तेरा दर